M - 2020 - 1 Part - (A)

1. (A) ⇒ इंडियन एसोसिएशन :- यह एक क्षेत्रीय राजनीतिक दल था जिसकी स्थापना 1876 ई. मे सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी तथा आनंद मोहन बोस के द्वारा की गई थी।

(B) चार्ल्स मेटकाफ :- यह ब्रिटिश गवर्नर थे जिनका कार्यकाल (1835 - 36) ई तक था। इन्हे भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता कहा गया है।

(C) महादेव देसाई :-

(D) नीनो-डी- कुन्हा :-

(E) एनफील्ड राइफल :- यह एक खास तरह की बंदूक थी जिसमे चर्बी वाले कारतूसो का प्रयोग किया जाता है।

- 1857 की क्रान्ति के प्रमुख कारणो मे एक इस राइफल का प्रयोग भी था जिससे भारतीय सैनिको की भावना आहत हुई थी।

(F) मलिक काफूर :- इसे हजार दिनारी के नाम से भी जाना जाता है।

- यह अलाउद्दीन की दक्षिण विजय अभियान का प्रमुख सेनापति था

DATE
PAGE

(G) घाघरा का युद्ध ⇒ 1529 ई. बाबर तथा अफगानों के मध्य लड़ा गया। - बाबर को विजय प्राप्त हुई।

(H) तालिकोट का युद्ध :- (इसे "राक्षसी तगड़ी" का युद्ध भी कहा जाता है)
- 1565 ई. में लड़े गए इस युद्ध के साथ ही महान विजयनगर साम्राज्य का अंत हुआ।

(J) जैन-उल-अबिदिन :-

(K) आल्हा-ऊदल :- 12वी शताब्दी मे चंदेल राज्य में राजा परमर्दिदेव की सेवा में कार्यरत दो वीर भाई थे।
- पृथ्वी राज चौहान के समकालीन थे
- मैहर (माता के मंदिर) में इनके चरण चिन्ह के अवशेष आज भी देखे जा सकते है।

(L) प्रतिहार नरेश राज्यपाल

(M) सूर्यसेन :- इन्हे मास्टर दा के नाम से भी जाना जाता है)
- यह पूर्वी प्रांत बंगाल में क्रान्तिकारी आंदोलन का नेतृत्व करते है।
- 1934 मे इन्हे फांसी की सजा सुनाई जाती है

N. बिल ऑफ राइट्स (1689) :- इनमे मूल अधिकारो का वर्णन मिलता है
- यह इंग्लैण्ड की गौरवपूर्ण क्रान्ति के परिणाम स्वरूप लागू हुए थे।

○ जार निकोलस द्वितीय :- रूस में राजा को जार कहा जाता था।
• 20 वी शताब्दी के प्रारम्भ में रूस की क्रान्ति के द्वारा जार शाही को समाप्त किया गया।

---

(2) (A) ⇒ स्वतंत्रता आंदोलन की शुरुआत बीसवी शताब्दी के आरम्भ मे दृष्टि गोचर होती है।
- जब नरम दल तथा गरम दल दोनो की नीतियाँ भारत की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने मे असफल होती है। तब भारत का युवा वर्ग 'अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओ' के प्रभाव मे आकर क्रान्तिकारी आंदोलनो की शुरुआत प्रारम्भ करता है।
- खुदीराम बोस सबसे पहले ब्रिटिश जनरल रीड व मुनरो की हत्या करते है जिसके परिणाम स्वरूप इन्हे फांसी की सजा सुनाई जाती है।
- भगतसिंह, राजगुरु, चन्द्रशेखर आजाद तथा अशफाक उल्लाह खाँ आदी क्रान्तिकारी 1924 मे एक संगठन - "हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन" का गठन करते है।
तथा 1924 मे इसी संगठन के द्वारा काकोरी स्टेशन पर ब्रिटिश खजाना

लूटा जाता है।

- लाला लाजपत राय की विरोध प्रदर्शन के दौरान हुई मृत्यु को क्रांतिकारी राष्ट्रीय अपमान के रूप में लेते हैं तथा ब्रिटिश अधिकारी सैन्डर्स की हत्या होती है।
- कलकत्ता में ब्रिटिश एसेंबली पर बम फेंके जाते हैं। इन घटनाओं के बाद क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया जाता है। जेल में अपनी कुछ माँगों को लेकर क्रांतिकारी द्वारा अनशन करते हैं। लगभग 63 दिनों के बाद "जतिनदास" की मृत्यु होती है। क्रांतिकारियों के इस बलिदान से संपूर्ण जनता जागरूक होती है तथा अंग्रेजों के खिलाफ संगठित होने का विश्वास तथा राष्ट्रीय भावना का अनुभव करती है। इस तरह क्रांतिकारियों के द्वारा आत्मबलिदान करके समाज में क्रांति की लहर जगाई जाती है।

2(B) भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत 1942 ई. में द्वितीय विश्व युद्ध के समय की जाती है।

महत्व :-

(1) इसमें बड़े स्तर पर महिलाओं के द्वारा इस आंदोलन में भाग लिया जाता है।

- छात्र, कृषक तथा समाज का हर वर्ग ब्रिटिश अंग्रेजों के खिलाफ एक जुट होता है।
- क्षेत्रीय नेता अपनी-अपनी सरकार का गठन करते हैं जैसे बलिया नामक स्थान पर चितु पांडे तथा बंगाल (मिदनापुर) में जातीय सरकार का गठन किया जाता है।
- ब्रिटिश संस्थाओं व परियोजनाओं पर आक्रमण किया जाता है।

DATE
PAGE

- रेडियो की गुप्त सेवा ऊषा मेहता नामक महिला के द्वारा दी जाती है
- इस आन्दोलन का समर्थन प्रमुख समाजवादी नेताओं जैसे - राममनोहर लोहिया तथा जयप्रकाश नारायण द्वारा भी किया जाता है।

Q 2 (c) → 1857 की क्रान्ति के सैनिक कारण :- 1857 की क्रान्ति अंग्रेजो की दमनकारी नीति का परिणाम थी जिससे भारतीय जनमानस अत्यधिक आहत हुआ था।

- भारतीय सैनिकों को धार्मिक प्रतीकों तथा चिन्हों आदि को धारण करने की मनाही की गई थी।
- भारतीयों को सेना में उच्च पद नहीं दिया जाता था।
- भारतीय सैनिकों के साथ यूरोपीय सैनिकों द्वारा भेदभाव पूर्ण व्यवहार किया जाता था।
- एनफील्ड राइफल का प्रयोग जिसमें गाय व सुअर की चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग किया जाता था
- मंगल पांडे नामक सैनिक ने सबसे पहले विद्रोह किया।

2 (D) :- मौर्य साम्राज्य की स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा कौटिल्य की सहायता से लगभग 322 ई. पू. में की गई थी।

- चंद्रगुप्त ने अत्यधिक शक्तिशाली नंद वंश के अंतिम सम्राट घनानंद को पराजित किया।
- चंद्रगुप्त एक आम नागरिक था जो अपने महान कार्यों तथा गुणों के बल पर ~~सम्पू~~ सम्पूर्ण भारत

वर्ष का सम्राट बना
- यह अपनी प्रशासनिक तथा व्यय व्यवस्था के लिए प्रसिद्ध हुआ
- मेगस्थनीज (यूनानी राजदूत) ने अपनी पुस्तक इंडिका में इस समय के वैभव का वर्णन किया

Q. E कुंवर चैन सिंह - नरसिंहगढ़ रियासत के राजकुमार थे।
- अंग्रेजो द्वारा भोपाल के नवाब से 1818 ई. में एक समझौता किया गया तथा सीहोर में एक छावनी बनाई गई और आस-पास की रियासतों के राजनैतिक अधिकार अंग्रेजो के हाथ मे चले गए जिसका विद्रोह चैन सिंह के द्वारा किया गया।
- यह मध्य के प्रथम शहीद है।
- सीहोर में इनकी छत्री है।
- चैन सिंह व अंग्रेज जनरल मेडॉक के मध्य सीहोर मे युद्ध हुआ जिसमें चैन सिंह वीरगति को प्राप्त हुए।
- मेडॉक ने छलनीति से नरसिंह गढ के सेनाध्यक्ष को अपनी ओर मिला लिया था।

(F) मध्यप्रदेश के ताम्रपाषाणिक स्थल
- ताम्रपाणिक सभ्यता अर्थात जब पत्थर के साथ-साथ तांबे का प्रयोग भी प्रारम्भ होगया था।
- मध्यप्रदेश में कायथा, नवदाटोली, एरण आदी स्थानो पर इस काल के साक्ष्य मिले है।

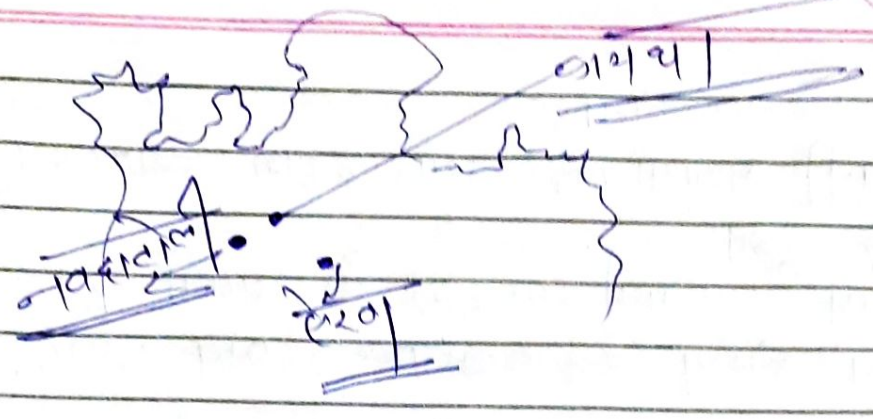

I ⇒ भारत छोड़ो आंदोलन सन् 1942 में प्रारंभ हुआ जिसमें म.प्र. का योगदान निम्न लिखित रूप में देखा जा सकता है।

- म.प्र. में इस आंदोलन की प्रथम चिंगारी
- सेठ गोविन्द दास ने जबलपुर से इसका नेतृत्व किया था
- इस समय गांधी जी द्वारा करो या मरो का नारा दिया गया था
- आपरेशन जीरो ऑवर में म.प्र. के नेता भी गिरफ्तार हुए थे

J हुमायूँ की असफलता के कारण ! -

1. हुमायूँ ने राज्य का बँटवारा पहले ही अपने भाईयों में कर दिया जिससे तथा बाद में वह उसकी सहायता हेतु कभी आगे नहीं आए
2. दूरदर्शिता की कमी।
3. नेतृत्व क्षमता का अभाव
4. निरन्तर विद्रोह हुए जिसे दबाने हुमायूँ को स्वयं जाना।

(J) शेरशाह सूरी एक कुशल तथा साहसी एक शासक था।

(K) गौतमी पुत्र शातकर्णी - यह सातवाहन वंश का प्रसिद्ध शासक था, जिसके विषय में जानकारी इसकी माँ गौतमी द्वारा लिखे नासिक अभिलेख से प्राप्त होती है।
- इसने शक शासक नहपान को भी पराजित किया था।

(L) फ्रांस की क्रान्ति में दार्शनिकों का योगदान
- क्रान्ति पूर्व पुनर्जागरण काल में फ्रांस में अनेक लेखक, विचारक एवं दार्शनिक हुए, जिन्होंने जनमानस को फ्रांस की पुरातन व्यवस्था में परिवर्तन के लिए जागरूक व प्रेरित किया।
- फ्रांसीसी राजतंत्र की आलोचना करने वाला पहला प्रमुख व्यक्ति मॉन्टेस्क्यू था, जिसने दैवत्व के सिद्धांत की आलोचना की। तथा शक्ति के पृथक्करण के सिद्धांत के द्वारा निरंकुश राजव्यवस्था पर चोट की। उसने क्रान्ति की बात नहीं की केवल राजतंत्र के दोषों को उजागर किया।
- वॉल्टेयर अगला प्रभावी नाम है, जिसने ब्रिटेन की प्रभावी तथा उदार व्यवस्था का सजीव चित्रण करके फ्रांस की पुरातन व्यवस्था पर चोट की।
- फ्रांस की क्रान्ति पर रूसो के विचारों का प्रभाव भी स्पष्ट दिखता है, जिसकी पुष्टि नेपोलियन के कथन से होती है - "कि रूसो नहीं होता तो फ्रांस में क्रान्ति नहीं होती"

इस प्रकार समाज के जागरण में ही दार्शनिकों की भूमिका की स्पष्टता दृष्टिगोचर होती है।

3(A):— प्रथम विश्व युद्ध के कारण :—

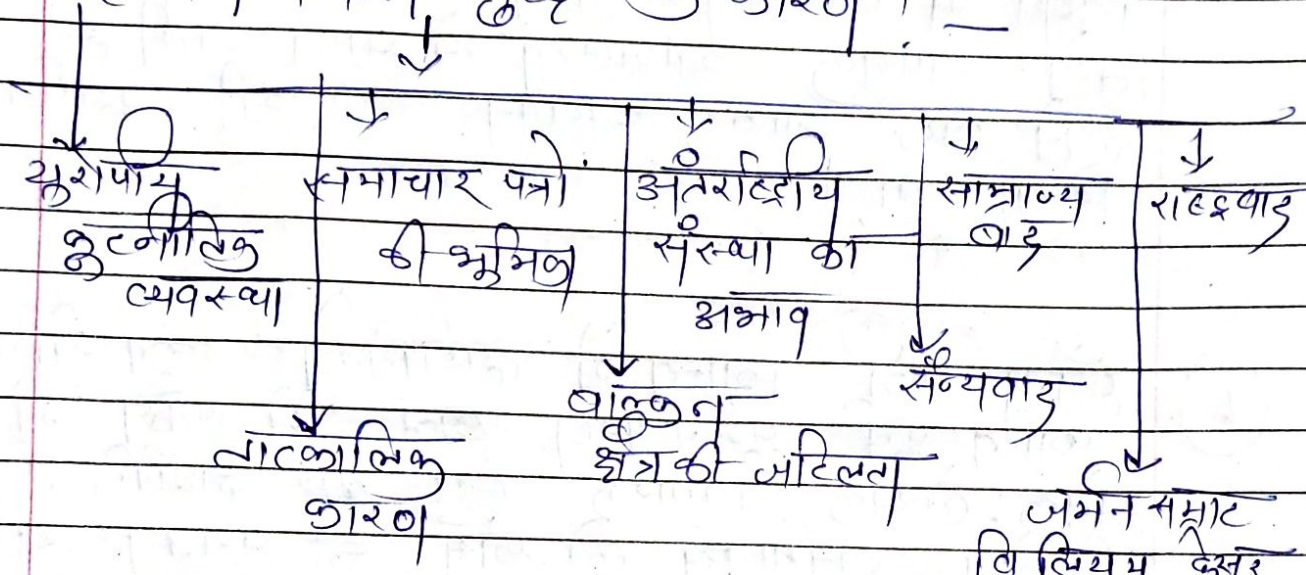

① यूरोपीय कूटनीतिक व्यवस्था :— यूरोप में गुप्त संधियाँ हो रही थी। तथा जर्मनी व ऑस्ट्रिया के मध्य तनातनी चल रही थी जिसमें बिसमार्क की नीतियाँ घातक साबित हुई।

② समाचार पत्र दुष्प्रचार कर रहे थे जिससे लोगों में द्वेष जागरत हो रहा था।

③ अंतर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव एक प्रमुख कारण था जिससे राष्ट्रों पर नियंत्रण स्थापित नहीं हो सका तथा प्रत्येक राष्ट्र अपनी मनमानी कर रहा था।

- साम्राज्यवाद :- लगभग प्रत्येक युरोपीय देश का एशिया या अफ्रिका में कहीं न कहीं उपनिवेश अवश्य था परन्तु जर्मनी व इटली इस दौड़ में पीछे रह गए अब यह भी उपनिवेश प्राप्त करना चाहते थे। जिससे इनमें प्रतिस्पर्धा का जन्म हुआ तथा आपसी प्रतिद्वन्द्विता में वृद्धि हुई।

- उग्र व विकृत राष्ट्रवाद :- प्रत्येक देश अपने राष्ट्र को अधिक महत्व दे रहा था अपना लाभ सर्वोपरी हो गया था।

- सैन्यवाद :- सैन्य उपकरणों तथा सैन्य व्यवस्था में खर्च में वृद्धि निरन्तर हो रही थी जो भयंकर परिणाम लेकर आई।

- बाल्कन क्षेत्र की जटिलता :- बाल्कन क्षेत्र की जटिलता ने त्रिवर्गीय संधि व त्रिवर्गीय मैत्री संघ के सदस्यों को आमने सामने लाकर खड़ा कर दिया।

- जर्मन सम्राट विलियम कैसर का व्यक्तित्व :-
  - यह अत्यंत हठी तथा महत्वकांक्षी व्यक्ति था।
  - इसने इंग्लैण्ड से शत्रुता कर ली थी।

- तात्कालिक कारण :- सर्विया में आस्ट्रिया के राजकुमार फर्डिनेंड की हत्या।

3 (B) सिंधु सभ्यता के पतन के कारण! —

इस महान सभ्यता के पतन के कारणों पर वैज्ञानिक एकमत नहीं है।

- गार्डन चाइल्ड एवं व्हिलर के अनुसार बाह्य आक्रमण इस सभ्यता के पतन का कारण है।

- कुछ वैज्ञानिकों (विचारकों) का मानना है नदि के किनारे बसे इन क्षेत्रों में बाढ़ पतन का कारण हो सकती है।

- जलवायु परिवर्तन को भी एक मुख्य कारण माना जाता है, जिस प्रकार "डायनासोर युग" इस परिवर्तन का शिकार हुआ तथा आज पृथ्वी पर सैकड़ों जीवों का अस्तित्व भी नष्ट होगया है उसी प्रकार सिंधु सभ्यता भी जलवायु परिवर्तन का शिकार हुए होगी।

- अन्य कारण — नदी का मार्ग परिवर्तन, महामारी, सूखा, अकाल, भूकम्प या विवर्तनीकी परिवर्तन आदि।

---

3 (C) ⇒ औद्योगिक क्रान्ति इंग्लैंड से शुरू हुई जिसके निम्न कारण है —

(1) अनुकूल राजनीतिक वातावरण! — अन्य देशों की तुलना में यहां राजनीतिक वातावरण शांत था

(2) भौगोलिक स्थिति :- चारो ओर से समुद्र से घिरा था, जिससे व्यापारिक आवागमन आसानी से संभव हो सका।

(3) सुदृढ नौसैनिक शक्ति :- इंग्लैंड का विशाल औपनिवेशिक साम्राज्य का आधार इसकी नौसैनिक शक्ति ही थी।

(4) प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता

(5) कृषि क्रांति :- इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति से पूर्व कृषि क्रांति हो चुकी थी तथा खाद्यन की समस्या का निदान पहले ही हो चुका था।

(6) जनसंख्या वृद्धि :- तीव्र जनसंख्या वृद्धि से, वस्तुओं की मांग बढ़ी जिससे उत्पादन बढ़ाने व अन्य प्रकार के सुधार करने की प्रेरणा मिली।

(7) इंग्लैण्ड का औपनिवेशिक विस्तार

(8) पूंजी की उपलब्धता।

(9) वैज्ञानिक प्रगति एवं नए अविष्कार आदि